INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भूमंडलीकरण और बिश्नोई समाज के पारिवारिक मूल्यों व संरचना में परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. नवनीत कुमार,

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जे. एस. हिन्दू पी. जी. कॉलेज, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

शोध-सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र भूमंडलीकरण (Globalization), औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं के आलोक में राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के ग्रामीण-अर्धशहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले बिश्नोई समुदाय के पारिवारिक ताने-बाने, नातेदारी व्यवस्था और पारंपरिक मूल्यों में आ रहे संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक रूपांतरणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। 15वीं शताब्दी में गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित 29 नियमों पर आधारित बिश्नोई समाज पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार, कठोर पर्यावरण-नैतिकता और सामूहिक उत्तरदायित्व के लिए जाना जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक व अनुभावात्मक विश्लेषण (2023 से पूर्व के समाजशास्त्रीय संदर्भों और द्वितीयक संकलनों) पर आधारित है। अध्ययन दर्शाता है कि भूमंडलीकरण जनित बाज़ार अर्थव्यवस्था, आधुनिक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा, भौगोलिक गतिशीलता और उपभोक्तावाद ने बिश्नोई समाज में संयुक्त परिवारों के विखंडन, एकल परिवारों के उद्भव, पितृसत्तात्मक कठोरता में कमी, तथा महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्वायत्तता में वृद्धि की है। इसके साथ ही, युवा पीढ़ी के समक्ष आधुनिक भौतिकता और पारंपरिक प्रकृति-केंद्रित धार्मिक आचार-संहिता के मध्य उत्पन्न सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural Lag) का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन भी किया गया है।

बीज शब्द (Keywords): भूमंडलीकरण, बिश्नोई समाज, संयुक्त परिवार, सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक मूल्य, पारिस्थितिकीय समाजशास्त्र, संरचनात्मक प्रकार्यवाद।

1. प्रस्तावना (Introduction)

परिवार समाज की सर्वाधिक मौलिक और सार्वभौमिक प्राथमिक संस्था है, जो व्यक्ति के समाजीकरण, सामाजिक नियंत्रण और सांस्कृतिक निरंतरता का मुख्य आधार रही है। भारतीय समाज की रीढ़ पारंपरिक 'संयुक्त परिवार' (Joint Family) व्यवस्था रही है, जहाँ रक्त-संबंध, सामूहिक निवास, साझी रसोई, संपत्ति का सह-स्वामित्व और वयोवृद्धों का अधिकार केंद्रीय तत्व रहे हैं। 20वीं सदी के अंतिम दशक (विशेषकर 1991 के बाद) में भारत द्वारा अपनाई गई उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीतियों ने सामाजिक संरचना के प्रत्येक अंग को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है।

भूमंडलीकरण मात्र एक आर्थिक परिघटना नहीं है, बल्कि यह एक बहु-आयामी सांस्कृतिक व सामाजिक प्रक्रिया है, जिसने स्थानीय संस्कृतियों, समुदाय-आधारित जीवन शैलियों और पारंपरिक पारिवारिक प्रतिमानों को नया रूप दिया है। समाजशास्त्री एंथनी गिडिन्स (Anthony Giddens) के अनुसार, भूमंडलीकरण स्थानीय घटनाओं को दूरस्थ घटनाओं द्वारा आकार देने और सामाजिक संबंधों के गहन एकीकरण की प्रक्रिया है।

इस वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बिश्नोई समाज का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। बिश्नोई समुदाय अपनी अनूठी पारिस्थितिकीय चेतना (Ecological Consciousness), कठोर धार्मिक आचार-संहिता और सुदृढ़ सामुदायिक एकजुटता के लिए विश्व विख्यात रहा है। गुरु जाम्भोजी (1451-1536 ई.) द्वारा संकलित 29 नियमों में पर्यावरण संरक्षण, वन्यजीव रक्षा, स्वच्छता, मद्यनिषेध और नैतिक आचरण के साथ-साथ सुदृढ़ पारिवारिक कर्तव्यों का भी स्पष्ट विधान है। ऐतिहासिक रूप से यह समाज कृषि और पशुपालन पर आधारित आत्मनिर्भर ग्रामीण संयुक्त परिवारों का प्रतिनिधित्व करता रहा है।

वैश्वीकरण के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार, उच्च शिक्षा के अवसर, नगरीकरण और नई रोजगार संरचनाओं ने बिश्नोई परिवारों के पारंपरिक स्वरूप को बुनियादी चुनौतियों के सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया है।

2. अध्ययन का औचित्य एवं समस्या का सूत्रीकरण (Rationale and Statement of the Problem)

आधुनिक समाजशास्त्र में परिवर्तन और सातत्य (Change and Continuity) का द्वंद्व एक प्रमुख विमर्श है। बिश्नोई समाज, जो सदियों से अपनी धार्मिक मान्यताओं के कारण आधुनिकता के नकारात्मक प्रभावों से काफी हद तक सुरक्षित माना जाता था, वर्तमान में भूमंडलीकरण की तीव्र लहरों से अछूता नहीं रह सका है।

समस्या यह है कि क्या बाज़ारवादी शक्तियों और उपभोक्तावादी संस्कृति ने बिश्नोई समाज के पारंपरिक 'सामूहिक कल्याण' की भावना को 'व्यक्तिवाद' (Individualism) में बदल दिया है? क्या युवा पीढ़ी नगरों की ओर पलायन करके संयुक्त परिवार के दायित्वों से विमुख हो रही है? तथा क्या पर्यावरण और जीवों के प्रति उनकी पारंपरिक पारिवारिक प्रतिबद्धता आधुनिकता के दबाव में क्षीण हो रही है? यह शोध पत्र इन्हीं प्रश्नों के समाजशास्त्रीय उत्तर तलाशने का एक प्रयास है।

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. बिश्नोई समाज की पारंपरिक पारिवारिक संरचना और मूल्यों की ऐतिहासिक-समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।

2. भूमंडलीकरण, आधुनिक शिक्षा और प्रवास के प्रभाव से संयुक्त परिवार के एकल परिवार में रूपांतरण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
3. पारिवारिक सत्ता-संरचना, निर्णय-प्रक्रिया और महिलाओं की प्रस्थिति (Status of Women) में आए परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।
4. पारंपरिक नैतिक-पर्यावरणीय मूल्यों और आधुनिक भौतिकतावादी जीवनशैली के मध्य उत्पन्न अंतर्विरोधों (पीढ़ीगत अंतराल) की पड़ताल करना।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध प्रारूप पर आधारित है।

- **विश्लेषण की इकाइयाँ:** राजस्थान (जोधपुर, बीकानेर, नागौर) और पश्चिमी हरियाणा के बिश्नोई बहुल क्षेत्रों के समाजशास्त्रीय संदर्भ।
- **तथ्य संकलन:** अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समाजशास्त्रीय स्रोतों का समन्वय किया गया है। 2023 से पूर्व उपलब्ध प्रासंगिक शोध पत्रिकाओं, जनगणना रिपोर्टों, नृजातीय अध्ययनों (Ethnographic Studies), तथा सामाजिक मानवविज्ञानियों (जैसे एम. एन. श्रीनिवास, एस. सी. दुबे, योगेंद्र सिंह) के सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया गया है।
- **सैद्धांतिक ढांचा:** अध्ययन में पार्सन्स के 'संरचनात्मक प्रकार्यवाद' (Structural Functionalism) और विलियम एफ. ऑगबर्न के 'सांस्कृतिक विलम्बना' (Cultural Lag) के सिद्धांतों को विश्लेषणात्मक आधार बनाया गया है।

5. बिश्नोई समाज: पारंपरिक पारिवारिक संरचना व सामाजिक मूल्य

बिश्नोई समाज का ताना-बाना गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित 29 नियमों (बीस + नौ = बिश्नोई) पर आधारित है। इन नियमों में केवल आध्यात्मिक निर्देश ही नहीं हैं, बल्कि वे एक स्वस्थ, सुखी और संगठित पारिवारिक जीवन की नियमावली भी हैं:

- **आंतरिक शुचिता एवं सामाजिक व्यवस्था:** प्रातःकाल स्नान, सत्य बोलना, चोरी न करना, दया भाव रखना, और मद्य-मांस तथा तंबाकू आदि व्यसनों से दूर रहना।
- **पर्यावरण संरक्षण:** हरे वृक्ष (विशेष रूप से खेजड़ी) न काटना और जीवों (विशेषकर हिरण/चिंकारा) पर दया करना। 1730 ई. का 'खेजड़ली बलिदान', जहाँ अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राण न्योछावर किए, परिवार द्वारा दिए जाने वाले इसी नैतिक समाजीकरण का चरम उदाहरण था।
- **पारंपरिक संयुक्त परिवार:** पारंपरिक रूप से बिश्नोई परिवार पितृवंशीय (Patrilineal), पितृस्थानीय (Patrilocal) और पितृसत्तात्मक (Patriarchal) रहे हैं। परिवार का सबसे वृद्ध पुरुष

(मुखिया/दादा/पिता) संपूर्ण परिवार की कृषि भूमि, पशुधन और सामाजिक-धार्मिक निर्णयों का अंतिम प्राधिकारी होता था। परिवार में तीन या चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं, जिससे बच्चों का समाजीकरण स्वतः ही सामूहिक मूल्यों के अनुरूप होता था।

6. भूमंडलीकरण के प्रभाव: पारिवारिक संरचना में परिवर्तन

तालिका 1 में भूमंडलीकरण से पूर्व और उसके पश्चात बिश्नोई समाज के पारिवारिक आयामों में आए संरचनात्मक अंतर को संक्षेप में दर्शाया गया है:

पारिवारिक आयाम	पारंपरिक प्रतिमान (पूर्व-भूमंडलीकरण)	आधुनिक प्रतिमान (उत्तर-भूमंडलीकरण प्रभाव)
परिवार का प्रकार	विस्तृत एवं संयुक्त परिवार	एकल, नाभिकीय एवं विखंडित परिवार
आर्थिक आधार	आत्मनिर्भर कृषि, पशुपालन, वस्तु-विनिमय	बहु-व्यवसाय, सरकारी/निजी सेवाएँ, व्यापार
सत्ता का स्वरूप	कठोर पितृसत्तात्मक, वयोवृद्धों का एकाधिकार	समतावादी प्रवृत्तियाँ, सहभागात्मक निर्णय
स्त्री की प्रस्थिति	घरेलू श्रम, कृषि कार्य, पर्दा प्रथा	शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वायत्त, राजनीतिक भागीदारी
विवाह चयन	माता-पिता द्वारा तय (गौत्र बहिर्विवाह आधारित)	व्यक्तिगत सहमति को प्राथमिकता, मध्यस्थों की घटती भूमिका
बुजुर्गों की स्थिति	सर्वोच्च समादरणीय, केंद्रीय शक्ति	भावनात्मक एकाकीपन, निर्णय प्रक्रिया में हाशिए पर

6.1 संयुक्त परिवार का विघटन एवं एकल परिवारों की वृद्धि

भूमंडलीकरण ने बाज़ारोन्मुखी अर्थव्यवस्था को गति दी। कृषि में मशीनीकरण (ट्रैक्टर, थ्रेशर, ट्यूबवेल) के कारण पारंपरिक कृषि श्रम में पारिवारिक सदस्यों की निर्भरता कम हुई। इसके समानांतर, उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के प्रसार ने बिश्नोई युवाओं को शहरों (जोधपुर, जयपुर, दिल्ली, चंडीगढ़) की ओर आकर्षित किया।

औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों ने भौगोलिक गतिशीलता (Geographical Mobility) को बढ़ाया, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों का विखंडन हुआ और 'नाभिकीय परिवार' (Nuclear Family) अस्तित्व में आए। संपत्ति के बंटवारे और स्वतंत्र आवास की मांग अब सामाजिक विचलन न रहकर एक सामान्य परिघटना बन गई है।

6.2 आजीविका विविधीकरण और आर्थिक निर्भरता में बदलाव

पारंपरिक बिश्नोई परिवार की संपूर्ण आर्थिकी खेती और दूध-उत्पादन पर टिकी थी, जहाँ परिवार एक 'उत्पादक इकाई' (Unit of Production) के रूप में कार्य करता था। भूमंडलीकरण ने उपभोक्तावाद और बाज़ार तंत्र को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचा दिया। बिश्नोई युवा अब पारंपरिक कृषि तक सीमित न रहकर सिविल सेवाओं, पुलिस, कानून, चिकित्सा, इंजीनियरिंग और रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में प्रवेश कर रहे हैं। इस आर्थिक विविधीकरण ने पारंपरिक पारिवारिक श्रम-साझेदारी को समाप्त कर परिवार को मुख्यतः एक 'उपभोग इकाई' (Unit of Consumption) बना दिया है।

7. पारिवारिक मूल्यों एवं अंतःक्रियाओं में रूपांतरण

7.1 पितृसत्तात्मक प्रभुत्व का ह्रास और लोकतांत्रिक निर्णय-प्रक्रिया

पारंपरिक रूप से परिवार के मुखिया की आज्ञा सर्वोपरि होती थी। विवाह, शिक्षा, संपत्ति क्रय-विक्रय जैसे समस्त निर्णय मुखिया द्वारा लिए जाते थे। भूमंडलीकरण, जनसंचार माध्यमों (टेलीविजन, इंटरनेट) और मानवाधिकार विमर्शों ने पारिवारिक लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया है। शिक्षित बेटे और बहुएँ अब निर्णयों में अपनी राय रखते हैं। यद्यपि बुजुर्गों के प्रति आदर का भाव अभी भी विद्यमान है, परंतु आज्ञाकारिता की कठोरता कम होकर विचार-विमर्श और पारस्परिक सहमति में बदल गई है।

7.2 बिश्नोई महिलाओं की प्रस्थिति में क्रांतिकारी सुधार

पारंपरिक ग्रामीण समाज में बिश्नोई स्त्रियाँ कठोर श्रम (खेतों में काम, पशुओं की देखभाल, मीलों दूर से पानी लाना) करती थीं और घूंघट प्रथा का कड़ाई से पालन करती थीं। 21वीं सदी के प्रारंभिक दो दशकों में महिला शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया है।

- बालिका शिक्षा को अब पारिवारिक प्रतिष्ठा का विषय माना जाने लगा है।
- बिश्नोई महिलाएँ उच्च प्रशासनिक सेवाओं, शिक्षण, चिकित्सा और पंचायती राज संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।
- आर्थिक आत्मनिर्भरता ने महिलाओं के आत्म-सम्मान और परिवार के भीतर उनकी निर्णयकारी भूमिका को सुदृढ़ किया है।
- पर्दा प्रथा और बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं में भारी गिरावट दर्ज की गई है।

7.3 विवाह संस्था एवं नातेदारी तंत्र में बदलाव

बिश्नोई समाज में अंतर्विवाह (Endogamy) नियम का कड़ाई से पालन होता है, जिसमें समुदाय के भीतर ही विवाह किए जाते हैं, परंतु रक्त-संबंधी गौत्रों को छोड़ा जाता है। पहले बाल विवाह या अल्पायु में विवाह के उदाहरण मिलते थे, जो अब लगभग समाप्त हो चुके हैं।

- विवाह की आयु में पर्याप्त वृद्धि हुई है।
- जीवनसाथी के चयन में वर-वधू की सहमति अनिवार्य मानी जाने लगी है।
- विवाह समारोहों में होने वाले दिखावे और विलासितापूर्ण व्यय में वृद्धि हुई है, जो भूमंडलीकरण के उपभोक्तावादी प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है, यद्यपि समाज के प्रबुद्ध संगठन सादगीपूर्ण सामूहिक विवाहों को भी निरंतर प्रोत्साहित कर रहे हैं।

7.4 वृद्धजनों की प्रस्थिति और भावनात्मक संकट

संयुक्त परिवारों के टूटने का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों पर पड़ा है। जहाँ पारंपरिक व्यवस्था में दादा-दादी परिवार की धुरी होते थे और पोते-पोतियों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, वहीं एकल परिवारों में वे प्रायः गाँवों में अकेले रह जाते हैं। युवाओं के नगरों में बसने के कारण वृद्धजनों को सामाजिक सुरक्षा की कमी और भावनात्मक एकाकीपन का सामना करना पड़ रहा है।

8. पर्यावरण-नैतिकता बनाम उपभोक्तावाद: सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural Lag)

विलियम एफ. ऑगबर्न ने अपनी पुस्तक *Social Change* (1922) में 'सांस्कृतिक विलम्बना' का सिद्धांत दिया था, जिसके अनुसार भौतिक संस्कृति (तकनीक, आवास, उपभोग सामग्री) तीव्रता से बदलती है, जबकि अभौतिक संस्कृति (मूल्य, विश्वास, धर्म) पीछे छूट जाती है। यह सिद्धांत वर्तमान बिश्नोई समाज पर सटीक बैठता है।

- **भौतिक परिवर्तन:** बिश्नोई परिवारों ने आधुनिक सुख-सुविधाओं–पक्के मकान, गाड़ियाँ, स्मार्टफ़ोन और शहरी जीवनशैली को तीव्रता से अपनाया है।
- **मूल्यों का संघर्ष:** गुरु जाम्भोजी का सिद्धांत 'जीव दया' और 'प्रकृति-अनुकूल सादगी' का था। आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति अत्यधिक उपभोग और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को बढ़ावा देती है।
- **सकारात्मक निरंतरता:** इस द्वंद्व के बावजूद, यह समाजशास्त्रीय रूप से अत्यंत उल्लेखनीय है कि बिश्नोई युवाओं की एक बड़ी संख्या ने आधुनिक संचार माध्यमों (सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म) का उपयोग वन्यजीव संरक्षण और पर्यावरण सक्रियता को संगठित करने के लिए किया

है। शिकारियों (Poachers) के विरुद्ध कानूनी और जमीनी संघर्ष में आज का युवा बिश्नोई अपने पारंपरिक पारिवारिक संस्कारों को आधुनिक साधनों से सशक्त कर रहा है।

9. निष्कर्ष एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

प्रस्तुत समाजशास्त्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण ने बिश्नोई समाज की पारिवारिक संरचना और मूल्य-प्रणाली को गहरे स्तर पर पुनर्परिभाषित किया है।

1. **संरचनात्मक दृष्टि से:** बिश्नोई समाज 'संयुक्तता' से 'एकलता' की ओर अग्रसर हुआ है। परिवार का आकार छोटा हुआ है और नातेदारी नेटवर्क की अनौपचारिक पकड़ शिथिल हुई है।
2. **प्रकार्यात्मक दृष्टि से:** परिवार के आर्थिक, शैक्षिक और मनोरंजनात्मक प्रकार्य अब बाह्य संस्थाओं (विद्यालय, बाज़ार, मीडिया) को हस्तांतरित हो चुके हैं।
3. **सकारात्मक पहलू:** शिक्षा का प्रसार, महिलाओं का सशक्तिकरण, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन और युवाओं में लोकतांत्रिक चेतना का विकास इस दौर की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।
4. **चुनौतियाँ:** वृद्धों की उपेक्षा, उपभोक्तावादी जीवनशैली, पारिवारिक संबंधों में व्यक्तिवाद का प्रवेश और पारंपरिक सादगी का ह्रास प्रमुख चिंता के विषय हैं।

अंततः, बिश्नोई समाज पूर्ण रूप से विखंडित नहीं हुआ है, अपितु उसने भूमंडलीकरण के दबावों के बीच एक 'अनुकूलन' (Adaptation) स्थापित किया है। यह समाज आधुनिक शिक्षा और आर्थिक प्रगति को अपनाते हुए भी अपनी मूल पर्यावरणीय पहचान और गुरु-परंपरा के बुनियादी नैतिक मूल्यों को सहेजने के लिए संघर्षरत है। यह प्रक्रिया भारतीय समाज के उस व्यापक स्वरूप को दर्शाती है जहाँ 'परंपरा और आधुनिकता' एक-दूसरे को नष्ट किए बिना सह-अस्तित्व में बने रहने का प्रयास करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. **ऑगबर्न, डब्ल्यू. एफ.** (1922). *सोशल चेंज विद रेस्पेक्ट टू कल्चर एंड ओरिजिनल नेचर.* न्यूयॉर्क: बी. डब्ल्यू. ह्युबश.
2. **गिडिन्स, एंथनी** (1990). *द कॉन्सीक्वेंसेज ऑफ मॉडर्निटी.* कैम्ब्रिज: पोलिटी प्रेस.
3. **दुबे, एस. सी.** (1990). *भारतीय समाज.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
4. **पार्सन्स, टैलकॉट** (1951). *द सोशल सिस्टम.* ग्लेनको: द फ्री प्रेस.
5. **मुखर्जी, राधाकमल** (1965). *द सोशियोलॉजी ऑफ वैल्यूज.* लंदन: मैकमिलन.
6. **याज्ञिक, विमलेश** (2004). *पर्यावरण चेतना और बिश्नोई धर्म.* जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार.
7. **योगेंद्र सिंह** (1973). *मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन: ए सिस्टमैटिक स्टडी ऑफ सोशल चेंज.* फरीदाबाद: थॉमसन प्रेस.
8. **श्रीनिवास, एम. एन.** (1966). *सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया.* बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

9. **सोमानी, एन. के.** (1998). *बिश्नोई समाज का इतिहास एवं संस्कृति*. बीकानेर: संकल्प प्रकाशन.
10. **जोधपुर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका** (2012). *पश्चिमी राजस्थान में सामाजिक रूपांतरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*, खंड 18, अंक 2.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM